

हिन्दी जाति की अवधारणा और रामविलास शर्मा :

समीक्षात्मक अध्ययन - 1

डॉ. अजय कुमार विन्द

असि. प्रो. हिन्दी विभाग

राजकीय महाविद्यालय, नानौता, सहारनपुर

drajaybind@gmail.com

जिस तरह भूगोल, इतिहास, संस्कृति आदि कारकों ने दुनिया में अनेक मानव-समुदायों का निर्माण किया है, उसी तरह भाषा ने भी। इसलिए भाषा को जातीयता (Nationality) का एक महत्वपूर्ण कारक माना गया है। भाषा का जुड़ाव बहुत भावात्मक और गहरा होता है। हम एक-दूसरे के नजदीक भाषा के माध्यम से ही आते हैं। इसीलिए ज्ञान-विज्ञान के नये अनुसंधान, रचना एवं प्रचार-प्रसार में भाषा की भूमिका अहम् होती है। भाषा में इतनी सामर्थ्य होती है कि हम उसके साहचर्य में धर्म, संस्कृति, देश तक की सीमाओं को भूल जाते हैं। जायसी और रहीम हमारे लिए वैसे ही पुरखे हो जाते हैं जैसे तुलसीदास। सूर की पंक्ति में रसखान आकर बैठ जाते हैं। इस तरह भाषा के आधार पर देश धर्म से भी बड़े सांस्कृतिक समुदाय का निर्माण होता है। जिसमें धर्म-सम्प्रदाय के अलावा ऊँच-नीच, छोटे-बड़े, लिंग, वर्ण आदि का कोई भेद नहीं रहता। इसी को एक जातीयता के रूप में देखा गया है।